International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वामी ववेकानन्द का व्यावहारिक वेदान्त एवं वर्तमान शक्षा- पद्धति

शोध छात्र
मधुप मालवीय
दर्शनशास्त्र वभाग
नेहरू ग्राम भारती मानित वश्व वद्यालय
प्रयागराज

स्वामी ववेकानन्द को एक युगपुरुष के रूप में जाना जाता हैं, उन्होंने वेदान्त को एक नये रूप में प्रस्तुत कया, जिसे नव्य वेदान्त अथवा व्यावहारिक वेदान्त कहा जाता है। स्वामी जी ने वेदान्त की नवीन, संशो धत,परिष्कृत व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास कया। उन्होंने वेदांत को केवल सद्धान्त नहीं माना, बल्कि उसे जन साधारण के मध्य लोक प्रय बनाने का प्रयास भी कया। स्वामी जी के मानवतावाद काआधार उनका व्यावहारिक वेदांत ही है। स्वामी जी के व्यावहारिक वेदान्त का अर्थ आचार्य शंकर द्वारा वक सत प्राचीन परंपरागत वेदान्त से भन्न है।

स्वामी ववेकानन्द ने भारत की आध्यात्मिक परम्परा एवं पश्चिमी देशों की भौतिकवादी तत्त्वों के सकारात्मक पक्ष को स्पष्ट रूप से स्वीकार कया। स्वामी ववेकानन्द की वचारधारा में भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक मूल्य कूट-कूट कर भरे हुए थे। अत: उनके शक्षा दर्शन का दर्शन आधार भी वेदान्त अथवा उपनिषद ही रहे।

स्वामी जी का यह मानना था क इस जगत् के प्रत्येक जीव में एक परम सत्ता वद्यमान हैं। इस सत्य को पहचानना ही धर्म है। स्वामी जी एक महान दार्शनिक थे और दार्शनिक होने के नाते उन्होने अपने दर्शन के अनुकूल शै क्षक वचार प्रस्तुत कये। स्वामी जी के

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अनुसार प्रत्येक राष्ट्र के गठन का मूल कारण शक्षा ही रहा है। जो राष्ट्र जितना ही श क्षत है, वह सभी क्षेत्रों में उतना ही शक्ति - संचय करके राष्ट्रों के संघ में अपना गौरवपूर्ण स्थान ग्रहण करने में समर्थ हुआ है। शक्षा के आदर्श तथा उद्देश्य के वषय में स्वामी जी ने कहा है- "Education is the manifestation of the perfection already. in man. (उस पूर्णता की अ भव्यक्ति को शक्षा कहते हैं, जो मानव - प्रकृति के अज्ञान आवरण को दूर करके उसकी पूर्णता के वकास में दूर सहायक हो।

स्वामी जी शक्षा के द्वारा व्यक्ति के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के वकास पर जोर देते थे। इस लए इनका ज्ञान, कर्म, भक्ति और योग का मूल्य भौतिक सम्पन्नता की पृष्ठभू म पर अवलम्बित है, अर्थात स्वामी जी व्यक्ति के सर्वाङ्गीण वकास पर बल दोनों देते हैं। इनकी दृष्टि में जो शक्षा इन दोनों स्तर (भौतिक एवं आध्यात्मिक)पर कार्य करती है, वही स्तर पुरु कार्य वास्त वक शक्षा है

स्वामी ववेकानन्द ने मनुष्य निर्माण की शक्षा (man making Education) पर बल दिया। उनके अनुसार हमें ऐसी शक्षा चाहिए, जो मनुष्य के चरित्र का वकास करे उसके दोषों को दूर करके सकारात्मक मूल्यों को अ धष्ठित करे।

स्वामी जी ने वर्तमान शक्षा-पद्धति की आलोचना की। उनके अनुसार वर्तमान शक्षा-पद्धति पूर्णत: निषेधात्मक है, निषेधात्मक शक्षा या निषेध की बुनियाद पर आधारित शक्षा मृत्यु से भी भयानक है। स्वामी जी के अनुसार " शक्षा का अर्थ तुम्हारे दिमाग में ऐसी सूचनाओं का संग्रहण नहीं है जो आजीवन अनपची रहकर समस्या उत्पन्न करती रहे,जिस शक्षा से हम अपना जीवन - निर्माण चरित्र-गठन कर कर सकें, मनुष्य बन सके सकें और वचारों सामंजस्य कर सकें वही वास्तव में शक्षा है कहलाने योग्य है।" स्वामी जी के कहते हैं क प्राचीन धर्मों के अनुसार वह व्यक्ति नास्तिक है जो ईश्वर में वश्वास नहीं करता आर नया धर्म कहता है क, जिसमें आत्म वश्वास नहीं वहीं नास्तिक है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वामी जी ने वेदांत के सद्धांतों का प्रयोग करते हुए कहा क वेदान्त एकत्ववाद एवं वश्वास भी शक्षा देता है। इस वश्वास का अर्थ है - सबके प्रति वश्वास, 'क्यों क तुम सभी एक हो । अपने प्रति प्रेम का अर्थ सब प्रा णयों से प्रेम, सभी पशु-प क्षयो से प्रेम, सब वस्तुओं से प्रेम -क्यों क तुम सब एक हो।यही महान वश्वास जगत् को अ धक अच्छा बना सकेगा। स्वामी जी के अनुसार वही शक्षा-पद्धति स्वीकार करने योग्य है, जिससे हमारे आत्म वश्वास में वृ द्ध हो सके। इसी आत्म वश्वास का आदर्श ही हमारी सबसे अ धक सहायता कर सकता है। मेरा दृढ वश्वास है क यदि इस आत्म वश्वास और भी वस्तृत रूप से प्रचार होता यह कार्यरूप में परिणत हो जाता तो जगत में जितने दुःख और बुराइयाँ हैं, उनका'अ धकांश चला जाता। मानव - जाति के समग्र इतिहास में सभी महान स्त्री पुरुषों में यदि कोई महान प्रेरणा सर्वा धक सशक्त रही है तो यह वही आत्म वश्वास ही है। वे इस ज्ञान के साथ पैदा हुए थे क वे महान बनेंगे वे महान बने भी।

स्वामी ववेकानन्द ने शक्षा सूक्ष्मताओं पर पूरी स्पष्टता के साथ अपने वचारों को अ भव्यक्त कया। वे पाश्चात्य वज्ञान एवं वेदान्त दोनों के मध्य सामंजस्य करना चाहते थे । उनका यह मानना था क वज्ञान के आधुनिक आ वष्कारों ने जीवन को सरल एवं समृद्ध बनाया है, परन्तु साथ मनुष्य की तन के साथ- मन की संतुष्टि भी परमावश्यक है। वेदान्त व्यक्ति की मनोगत ओकांक्षाओं की तृप्ति भी कर सकता है और इस जगत की नैतिक मूल्यों को भी बनाए रखने में समृद्ध है। स्वामी जी ने कहा है क वर्तमान समय की यह आवश्यकता है क हम स्वतंत्र रूप से ज्ञान की व भन्न शाखाओं को समृद्ध करें एवं पूरे एवं पाश्चात्य दोनों की आवश्यकता आज देश को है। स्वामी जी ने तकनीकी शक्षा की आवश्यकता पर बल दिया, जिससे हम उद्योगों का वकास करें और और अपने आ र्थक जीवन स्तर को भी समृद्ध रख सके।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्वामी ववेकानन्द ने वेदान्त के मूल्यों को शक्षण की पद्धतियों पर लागू करनेपर वशेष बल दिया। उनके अनुसार शक्षा का भारतीय आदर्श मन का नियंत्रण है। एकाग्रता की प्राप्ति के साथ-साथ अनासक्ति की शक्ति भी अत्यंत आवश्यक है। स्वामी जी कहते हैं" तथ्यों के संग्रह क़ो नहीं अ पतु एकाग्रता को ही मैं शक्षा का मूल समझता हूँ। यदि मुझे पुनः शक्षा प्राप्त करनी होती तो मैं एकाग्रता और अनासक्ति दोनों की शक्तियों को वक सत करता है और उस निर्दोष यंत्र की सहायता से इच्छा मात्र से ही तथ्यों का संग्रह कर लेता। "

स्वामी जी के अनुसार शक्षा का वास्त वक उद्देश्य है- मनुष्य की पूर्णता की अ भव्यक्ति। यह पूर्णता कसी प्रकार की दक्षता न होकर व्यक्ति का अपना स्वभाव अथवा स्वरूप है। मनुष्य के व्यक्तित्व का वकास चेतना के प्रत्येक स्तर पर होना चाहिए, चाहे वह शारीरिक स्तर पर हो या बौ द्धक अथवा आध्यात्मिक स्तर पर। इसी कारण स्वामी जी कहते हैं क मनुष्य की दिव्यता या पूर्णता के प्रकाशन का यह अर्थ कदा प नहीं है क उसके व्यक्तित्व क जो अन्य भौतिक पक्ष हैं, उनकी उपेक्षा की जाय। स्वामी जी शारीरिक स्वास्थ्य - रक्षण के प्रति बड़े सजग थे और वे कहते है क जो शारीरिक दृष्टि से सुदृढ़ एवं शक्तिशाली हैं वहीं अध्यात्म के पथ पर अग्रसर हो सकता है। स्वामी जी की दृष्टि में शक्षा प्रयोजन है यह है क मनुष्य अपने जीवन में चारों पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष) का पालन कर सके।

स्वामी जी ने शक्षा एवं धर्म दोनों को महत्व दिया। उनके अनुसार शक्षा और धर्म दो अलग- अलग दिशाएं नहीं हैं इसी कारण जो उद्देश्य धर्म का है वही उद्देश्य शक्षा का भी होना चाहिए। स्वामी जी की दृष्टि में धर्म का अर्थ है- आध्यात्मिकता । वेदान्त अथवा उपनिषदों में प्रतिपादित जो एक तत्त्व है, जो सम्पूर्ण सृष्टि के रूप में व्यक्त हो रहा है, इस तत्व की अनुभूति ही धर्म है। इस लए स्वामी जी ने शक्षा को धर्म में रोपा। स्वामी जी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ने अपने वद्या र्थयों के लए जिन मूल्यों की, जिस चरित्र की आवश्यकता बतायी, वे थे - श्रद्धा वश्वास, साहस, सत्य के प्रति निष्ठा और ब्रम्हचर्य ।

स्वामी जी के अनुसार शक्षा या शक्षण- पद्धति एक सहायिका है, अनुकूल वातावरण दिए जाने पर मनुष्य अपने ज्ञान क़ो आ वस्कृत करता है। जिस प्रकार को हम कसी पौधे को रोपते हैं, जल देते हैं, खाद देते हैं, कन्तु उस पौधे का वकास उसकी अपनी आंतरिक शक्ति- संरचना और प्रकृति के अनुसार होता है । उसी प्रकार का हम कसी भी वद्यार्थी को चरित्र दे सकते हैं, इस वातावरण दे सकते हैं क वह अपनी वकास यात्रा सुगमतापूर्वक पूर्ण कर सके।

स्वामी जी ने जन- शक्षा, स्त्री शक्षा, व्यावसायिक शक्षा और राष्ट्रीय शक्षा, सभी क्षेत्रों में हमारा मार्गदर्शन कया है। जन- शक्षा के परिपेक्ष्य में स्वामी जी का दृष्टिकोण अत्यंत व्यापकथा। ये देश के सभी बच्चों,युवकों, वृद्धों क़ो साक्षर देखना चाहते थे। इन्होने देश की दरिद्रता को दूर करने के लए तकनीकी शक्षा - पद्धति को स्वीकार बल दिया।

स्वामी जी ने स्त्री शक्षा पर वशेष बल दिया, वे कहते हैं- स्मरण रहे क जन- साधारण और स्त्रियों में शक्षा का प्रसार हुए बिना उन्नति का कोई उपाय नहीं है। हमें स्त्रियों को ऐसी स्थिति में पहुँचा देना चाहिए, जहाँ वे अपनी समस्या सुलझा को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सकें। उनके लए यह काम न कोई कर सकता है और न कसी क़ो करना ही चाहिए ।

स्वामी ववेकानन्द ने उद्घोष कया क भारत के प्रत्येक व्यक्ति को श क्षत करो और शक्षा द्वारा उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुशलतापूर्वक कार्य करने के लए सक्षम करो, उसे स्वावलम्बी बनाओ, आत्मनिर्भर बनाओ, निर्भय बनाओ और इन सबसे ऊपर एक सच्चा मनुष्य बनाओ जो मानव सेवा द्वारा ईश्वर की प्राप्ति में सफल हो । इन्होने अपने दार्शनिक और शै क्षक वचारों को मूर्त रूप देने के लए रामकृष्ण मशन की स्थापना की,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 01 January- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

देश- वदेश में उसकी शाखाएं खोली और उनके द्वारा जन सेवा एवं जन- शक्षा की व्यवस्था की।

सन्दर्भ

1. शक्षा का आदर्श, स्वामी ववेकानंद रामकृष्ण मठ नागपुर
2. वेदांत, स्वामी ववेकानंद रामकृष्ण मठ नागपुर
3. वेदांत सद्धांत और व्यवहार, स्वामी सारदानंद रामकृष्ण मठ नागपुर
4. हमारी शक्षा, स्वामी निर्वेदानंद रामकृष्ण मठ नागपुर
5. वेदांत व्यवहार में, स्वामी परमानन्द रामकृष्ण मठ नागपुर
6. भारतीय नारी, स्वामी ववेकानंद रामकृष्ण मठ नागपुर